गुप्त कलीसिया–7

स्वर्गदूत, दुष्टात्माएं तथा आत्मिक युद्ध

डॉ. डेविड प्लॉट

Part - 2

पुराने नियम में वे वाचा के सन्दूक पर छाया किए हुए थे। निर्गमन 25:21–22, "और प्रायश्चित्त के ढकने को सन्दूक के ऊपर लगवाना; और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूंगा उसे सन्दूक के भीतर रखना। मैं उसके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूंगा; और इस्राएलियों के लिये जितनी आज्ञाएं मुझ को तुझे देनी होंगी, उन सभों के विषय मैं प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक पर होंगे, तुझ से वार्तालाप किया करूंगा।"

उन्हें परमेश्वर के रथस्वरूप भी माना गया है– भजन 18:10, "वह करूब पर सवार होकर उड़ा, वरन् पवन के पंखों पर सवारी करके वेग से उड़ा।"

साराप भी स्वर्गदूत हैं, साराप का वास्तविक अर्थ है, परमेश्वर की स्तुति से प्रकाशमान। अति सुन्दर चित्रण है यह! क्या आप अपने जीवन को परमेश्वर की स्तुति से प्रकाशमान नहीं देखना चाहते? परमेश्वर की उपासना में लीन। इनका उल्लेख एक ही बार किया है– यशायाह 6:2–4, "उससे ऊंचे पर साराप दिखाई दिए; उनके छः छः पंख थे; दो पंखों से वे अपने मुंह को ढांपे थे और दो से अपने पांवों को, और दो से उड़ रहे थे। वे एक दूसरे से पुकार पुकारकर कह रहे थेः "सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।" और पुकारनेवाले के शब्द से डेवढ़ियों की नींवें डोल उठीं, और भवन धूंए से भर गया।"

परमेश्वर की सृष्टि के सर्वशक्तिमान प्रतिनिधि। हमने प्रकाशितवाक्य 4 में देखा है– स्वर्ग के सामर्थी प्राणी! प्रकाशितवाक्य 4:6–8, "और उस सिंहासन के सामने मानो बिल्लौर के समान कांच का सा समुद्र है। सिंहासन के बीच में और सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी हैं, जिनके आगे पीछे आंखें ही आंखें हैं। पहला प्राणी सिंह के समान है, और दूसरा प्राणी बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी का मुंह मनुष्य का सा है, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है। चारों प्राणियों के छः छः पंख हैं, और चारों ओर और भीतर आंखें ही आंखें हैं; और वे रात दिन बिना विश्राम लिए यह कहते रहते हैं, "पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था और जो है और जो आनेवाला है।"

प्रधान स्वर्गदूत, मीकाईल। प्रधान स्वर्गदूत से प्रकट होता है कि उसे अन्य स्वर्गदूत पर अधिकार प्राप्त है। दानिय्येल की पुस्तक में उसे राजकुमार कहा गया है–दानिय्येल 10:13, "फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया, इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास रहा।"

यहूदा भी उसे प्रधान स्वर्गदूत कहता है– यहूदा 9, "परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा के शव के विषय में वाद–विवाद किया, तो उसको बुरा–भला कहके दोष लगाने का साहस न किया पर यह कहा, "प्रभु तुझे डांटे।"

प्रकाशितवाक्य 12 में मीकाईल और उसके दूत शैतान से लड़ते हैं।

1 थिस्सलुनीकियों 4 में पौलुस कहता है कि प्रभु यीशु का आगमन प्रधान स्वर्गदूत की पुकार के साथ होगा। आप उस दिन की कल्पना कर सकते हैं? परमेश्वर कहता है, "मीकाईल, समय हो गया है।" कैसा अद्‌भुत दिन! हे प्रभु यीशु, शीघ्र आ!

परमेश्वर का सन्देशवाहक जिब्राईल। धर्मशास्त्र में इन दो स्वर्गदूतों के नाम लिए गए हैं। जिब्राईल और मीकाईल!

दानिय्येल 8:16, "तब मुझे ऊलै नदी के बीच से एक मनुष्य का शब्द सुन पड़ा, जो पुकारकर कहता था, "हे जिब्राएल, उस जन को उसकी देखी हुई बातें समझा दे।"

परमेश्वर ने जिब्राईल को मरियम के पास भेजा था– लूका 1:26–27, "छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत, गलील के नासरत नगर में, एक कुंवारी के पास भेजा गया जिसकी मंगनी यूसुफ नामक दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थीः उस कुंवारी का नाम मरियम था।"

स्वर्गदूत के दो समूह हैं– पवित्र स्वर्गदूत और दुष्ट स्वर्गदूत।

पवित्र स्वर्गदूतः मरकुस 8:38, "जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस से भी लजाएगा।"

1 तीमुथियुस 5:21, "परमेश्वर, और मसीह यीशु और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूं कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर।"

दुष्ट स्वर्गदूतः ये वे दुष्टात्माएं हैं जिन्हें प्रभु यीशु ने मनुष्यों में से निकाला था। इनके विषय हम और अधिक चर्चा आगे चलकर करेंगे। दुष्टात्माओं को भी स्वर्गदूत कहा गया है परन्तु दुष्ट।

अब परमेश्वर के स्वर्गदूतः इसका अर्थ क्या है?

उत्पत्ति की पुस्तक में हाजिरा की कहानी है। उत्पत्ति 16:9–14, "यहोवा के दूत ने उससे कहा, "अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह।" और यहोवा के दूत ने उससे यह भी कहा, "मैं तेरे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा, यहां तक कि बहुतायत के कारण उसकी गणना न हो सकेगी।" और यहोवा के दूत ने उससे कहा, "देख तू गर्भवती है, और पुत्र जनेगी; तू उसका नाम इश्माएल रखना, क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख का हाल सुन लिया है। और वह मनुष्य बनैले गदहे के समान होगा, उसका हाथ सब के विरुद्ध उठेगा और सब के हाथ उसके विरुद्ध उठेंगे; और वह अपने सब भाई–बन्धुओं के मध्य में बसा रहेगा।" तब उसने यहोवा का नाम जिसने उससे बातें की थीं, अत्ताएलरोई रखकर कहा, "क्या मैं यहां भी उसको जाते हुए देखने पाई और देखने के बाद भी जीवित रही?" इस कारण उस कुएं का नाम लहैरोई कुआं पड़ा; वह तो कादेश और बेरेद के बीच में है।"

परमेश्वर के स्वर्गदूत ने हाजिरा से कहा कि वह अपनी स्वामिनी के अधीन रहे।

कभी कभी प्रभु का स्वर्गदूत प्रभु का ही रूपक है– उत्पत्ति 31:10–13, "भेड़–बकरियों के गाभिन होने के समय मैं ने स्वप्न में क्या देखा, कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं, सो धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले है। तब परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा, 'हे याकूब,' मैं ने कहा, 'क्या आज्ञा।' उसने कहा, 'आंखे उठाकर उन सब बकरों को, जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं, देख, कि वे धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले हैं; क्योंकि जो कुछ लाबान तुझ से करता है, वह मैं ने देखा है। मैं उस बेतेल का परमेश्वर हूं,

जहां तू ने एक खम्भे पर तेल डाल दिया था, और मेरी मन्नत मानी थी। अब चल, इस देश से निकलकर अपनी जन्मभूमि को लौट जा'।"

परन्तु प्रभु से अलग भी प्रकट होता है– 2 शमूएल 24:15–16, "तब यहोवा इस्राएलियों में सवेरे से ले ठहराए हुए समय तक मरी फैलाए रहा; और दान से लेकर बेर्शेबा तक रहनेवाली प्रजा में से सत्तर हज़ार पुरुष मर गए। परन्तु जब दूत ने यरूशलेम का नाश करने को उस पर अपना हाथ बढ़ाया, तब यहोवा वह विपत्ति डालकर शोकित हुआ, और प्रजा के नाश करनेवाले दूत से कहा, "बस कर; अब अपना हाथ खींच।" यहोवा का दूत उस समय अरौना नामक एक यबूसी के खलिहान के पास था।"

अतः उनका वर्णन अलग अलग समयों पर अलग–अलग है।

स्वर्गदूत का कार्यभार क्या है?

हमने देखा है कि स्वर्गदूत कौन है और अब हम देखेंगे कि उनका काम क्या है और वे हमसे क्या संबन्ध रखते हैं। हमारे जीवन से इसका क्या संबन्ध है? अतः हमारा प्रश्न है, स्वर्गदूतों का काम क्या है? पहला, वे परमेश्वर का महिमान्वन करते हैं। वे परमेश्वर की सेवा करते हैं– उसका महिमान्वन करते हैं– भजन 148:2, "हे उसके सब दूतो, उसकी स्तुति करोः हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति करो!"

वे परमेश्वर की महानता का वर्णन करते हैं– यशायाह की पुस्तक के सारप यही कर रहे थे– यशायाह 6:2–3, "उससे ऊंचे पर सारप दिखाई दिए; उनके छः छः पंख थे; दो पंखों से वे अपने मुंह को ढांपे थे और दो से अपने पांवों को, और दो से उड़ रहे थे। वे एक दूसरे से पुकार पुकारकर कह रहे थेः "सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।"

वे परमेश्वर की महानता और भलाई का वर्णन करते हैं। वे उद्धार की योजना का अनावरण होते देख परमेश्वर की स्तुति करते हैं। मसीह के जन्म पर उन्होंने स्तुतिगान गाया था– लूका 2:13–14, "तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया, "आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो।"

मनुष्य के उद्धार पर वे आनन्द करते हैं।

वे तरह तरह से परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं– भजन 103:20–21, "हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो! हे यहोवा की सारी सेनाओ, हे उसके टहलुओ, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो!"

स्वर्गदूत परमेश्वर का दण्ड भी लाते हैं– 2 शमूएल 24:15–16, "तब यहोवा इस्राएलियों में सवेरे से ले ठहराए हुए समय तक मरी फैलाए रहा; और दान से लेकर बेर्शेबा तक रहनेवाली प्रजा में से सत्तर हज़ार पुरुष मर गए। परन्तु जब दूत ने यरूशलेम का नाश करने को उस पर अपना हाथ बढ़ाया, तब यहोवा वह विपत्ति डालकर शोकित हुआ, और प्रजा के नाश करनेवाले दूत से कहा, "बस कर; अब अपना हाथ खींच।" यहोवा का दूत उस समय अरौना नामक एक यबूसी के खलिहान के पास था।"

2 राजा 19:35–36, "उसी रात में क्या हुआ कि यहोवा के दूत ने निकलकर अश्शूरियों की छावनी में एक लाख पचासी हज़ार पुरुषों को मारा, और भोर को जब लोग सवेरे उठे, तब देखा, कि शव ही शप पड़े हैं। तब अश्शूर का राजा सन्हेरीब चल दिया, और लौटकर नीनवे में रहने लगा।"

वे परमेश्वर के प्रतिनिधि भी हैं– जकर्याह 1:9–11, "तब मैं ने कहा, 'हे मेरे प्रभु ये कौन हैं?' तब जो दूत मुझ से बातें करता था, उसने मुझ से कहा, 'मैं तुझे बताऊंगा कि ये कौन हैं।' फिर जो पुरुष मेंहदियों के बीच खड़ा था, उसने कहा, 'यह वे हैं जिन को यहोवा ने पृथ्वी पर सैर अर्थात् घूमने के लिये भेजा है।' तब उन्होंने यहोवा के उस दूत से जो मेंहदियों के बीच खड़ा था, कहा, 'हम ने पृथ्वी पर सैर किया है, और क्या देखा कि सारी पृथ्वी में शान्ति और चैन है।'

वे परमेश्वर का काम पूरा करते हैं– मत्ती 28:2, "और देखो, एक बड़ा भूकम्प हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया।"

कब्र का पत्थर लुढ़का कर वह वहां बैठ गया।

वे परमेश्वर की सृष्टि को प्रभावित करते हैं– प्रकाशितवाक्य 7:2–3, "फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को जीवते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा; उसने उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, "जब तक हम

अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुंचाना।"

और जैसा हमने देखा, वे प्रभु यीशु के आगमन की पुकार करेंगे। 1 थिस्सलुनीकियों 4:16–18, "क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इस प्रकार इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।"

स्वर्गदूत हमारे साथ कैसे संबन्ध स्थापित करते हैं?

मैं प्रार्थना करता हूं कि हमारे अध्ययन के अन्त में स्वर्गदूतों के विषय में हमारा ज्ञान हमारे जीवन के विभिन्न पक्षों में हमें सोचने पर प्रेरित करेगा।

हमें यह जान लेना है कि वे हमसे भिन्न हैं

हम परमेश्वर के रूप में सृजे गए हैं।

उत्पत्ति 1:26–27, "फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।" तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की।"

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने रूप में सृजा है। उत्पत्ति 9:6 में परमेश्वर ने कहा, "जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है।"

"परमेश्वर के रूप में" अर्थात हम परमेश्वर का गुण प्रकट करते हैं। स्वर्गदूत ऐसे नहीं हैं।

हम सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं– उत्पत्ति 5:3, "जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वरूप के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने उसका नाम शेत रखा।"

स्वर्गदूतों की सन्तान नहीं है।

हम पाप से मुक्त कराए जा सकते हैं। स्वर्गदूत जिनका पतन हुआ है वे मुक्ति नहीं पाएंगे। धर्मशास्त्र स्पष्ट कहता है। इब्रानियों 2:14–16, "इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले। क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं वरन् अब्राहम के वंश को संभालता है।"

2 पतरस 2:4, "क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें।"

यहूदा 6, "फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन् अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में, जो सदा काल के लिये है, बन्धनों में रखा है।"

हमारे लिए यह एक महत्वपूर्ण बात है। पतित स्वर्गदूतों की नाईं परमेश्वर हमें भी अनन्त विनाश के लिए छोड़ सकता था कि हम भी नरक जाएं और इसमें वह पूर्णरूपेण धर्मी ठहरता है। भाइयों और बहनों यह उसका अनुग्रह ही है कि हम यह अध्ययन कर रहे हैं और इसी अनुग्रह के कारण हम वह गान गा सकते हैं जो स्वर्गदूत नहीं गा सकते, "मैं कैसे कहना चाहता हूं कि उसके लहू से है नजात। उसकी अनन्त दया से मुक्ति पाता, उसकी सन्तान सदा के लिए हूं।"

हम उसके रूप का प्रकाटीकरण हैं, हम सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं, हमारा उद्धार संभव है और हम एक दिन राज करेंगे। 1 कुरिन्थियों 6:3, "क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या सांसारिक बातों का निर्णय न करें?"

इब्रानियों 1:4, "और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।"

परमेश्वर हमें स्वर्गदूतों पर अधिकार देगा। आज भी वे हमारी सेवा हेतु सेवक आत्माएं हैं जैसा 1 कुरिन्थियों 6 में लिखा है।

स्वर्गदूत हमारे चारों ओर हैं। वे हमारे साथ आराधना करते हैं। इब्रानियों 12:22–24, "पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है।"

आराधना में हम हज़ारों हज़ारों स्वर्गदूतों के साथ होते हैं।

वे हमारी आज्ञाकारिता को देखते हैं। पौलुस कहता है– 1 तीमुथियुस 5:21, "परमेश्वर, और मसीह यीशु और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूं कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर।"

पौलुस के कहने का अर्थ है कि तीमुथियुस के काम, उसकी आज्ञाकारिता या अवज्ञा स्वर्गदूतों के समक्ष है। स्वर्गदूत उसकी आज्ञाकारिता देखकर परमेश्वर की महिमा करते हैं परन्तु उसकी अवज्ञा के कारण उन्हें दुःख होगा। हम छिपा कर भी कुछ करें तो परमेश्वर के समक्ष सब प्रकट है। 1 कुरिन्थियों 4:9–10, " मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों के समान ठहराया है, जिनकी मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये तमाशा ठहरे हैं। हम मसीह के लिये मूर्ख है, परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं, परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं।"

हमारा जीवन स्वर्गदूतों के समक्ष प्रकट है। वे हमारी आज्ञाकारिता को देखते हैं।

वे परमेश्वर की सुरक्षा को कार्यान्वित करते हैं

दानिय्येल 6:21–23, "तब दानिय्येल ने राजा से कहा, "हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे! मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुंह को ऐसा बन्द कर रखा कि उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की; इसका कारण यह है, कि मैं उसके सामने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैं ने कोई भूल नहीं की।" तब राजा ने बहुत आनन्दित होकर, दानिय्येल को गड़हे में से निकालने की आज्ञा दी। अतः दानिय्येल गड़हे में से निकाला गया, और उस पर हानि का कोई चिन्ह न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था।"

भजन 91:11–12, "क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें। वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।"

हमारी किसी संकट में रक्षा की जाती है तो क्या हमें यह बोध होता है कि स्वर्गदूत वहां हैं।

स्वर्गदूत परमेश्वर की योजना प्रकट करते हैं।

प्रेरितों के काम 10:3–6, "उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास भीतर आकर कहता है, "हे कुरनेलियुस!" उसने उसे ध्यान से देखा और डरकर कहा, "हे प्रभु क्या है?" उसने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं; और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह शमौन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहां अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है।"

परमेश्वर ने कुरनेलियुस के पास स्वर्गदूत को भेजा था। पौलुस के पास भी बन्दीगृह में स्वर्गदूत आया था– प्रेरितों के काम 27:23–26, "क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूं, और जिसकी सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा, 'हे पौलुस, मत डर! तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है। देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।' इसलिये, हे सज्जनो, ढाढ़स बांधो; क्योंकि मैं परमेश्वर का विश्वास करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा। परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।"

एलिय्याह ईजेबेल से डर कर भाग रहा था तब स्वर्गदूत उसके पास आया था– 1 राजाओं 19:5–8, "वह झाऊ के पेड़ तले लेटकर सो गया और देखो एक दूत ने उसे छूकर कहा, "उठकर खा।" उसने दृष्टि करके क्या देखा कि मेरे सिरहाने पत्थरों पर पकी हुई एक रोटी, और एक सुराही पानी रखा है; तब उसने खाया और पिया और फिर लेट गया। दूसरी बार यहोवा का दूत आया और उसे छूकर कहा, "उठकर खा, क्योंकि तुझे बहुत भारी यात्रा करनी है।" तब उसने उठकर खाया पिया; और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन रात चलते चलते परमेश्वर के पर्वत होरेब को पहुंचा।"

परमेश्वर का स्वर्गदूत उसके लिए भोजन लाया था।

वे ईश्वरभक्तों की सेवा करते हैं– मत्ती 4:11, "तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।"

वे मुक्त करवाते हैं– प्रेरितों के काम 5:17–20, "तब महायाजक और उसके सब साथी जो सदूकियों के पंथ के थे, डाह से भर कर उठे। और प्रेरितों को पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर दिया। परन्तु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें बाहर लाकर कहा, "जाओ, मन्दिर में खड़े होकर, इस जीवन की सब बातें लोगों को सुनाओ।" वे यह सुनकर भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश देने लगे।"

प्रेरितों के काम 12:6–11, "जब हेरोदेस उसे लोगों के सामने लाने को था, उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था; और पहरुए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया और कहा, "उठ, जल्दी कर।" और उसके हाथ से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं। तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "कमर बांध, और अपने जूते पहिन ले।" उसने वैसा ही किया। फिर उसने उससे कहा, "अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे हो ले।" वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह न जानता था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है वह सच है, वरन् यह समझा कि मैं दर्शन देख रहा हूं। तब वे पहले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुंचे, जो नगर की ओर है। वह उनके लिये आप से आप खुल गया, और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, और तुरन्त ही स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला गया। तब पतरस ने सचेत होकर कहा, "अब मैं ने सच जान लिया है कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया, और यहूदियों की सारी आशा तोड़ दी है।" "

याकूब का सिर कटवा दिया गया था और हेरोदेस पतरस का भी सिर कटवाना चाहता था– प्रेरितों के काम 12:6, "जब हेरोदेस उसे लोगों के सामने लाने को था, उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था; और पहरुए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे।"

पतरस तो मरने के लिए तैयार गहरी नींद में सो रहा था– प्रेरितों के काम 12:7, "तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया और कहा, "उठ, जल्दी कर।" और उसके हाथ से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं।"

पतरस जाग जाता है तो क्या देखता है– प्रेरितों के काम 12:8–11, "तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "कमर बांध, और अपने जूते पहिन ले।" उसने वैसा ही किया। फिर उसने उससे कहा, "अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे हो ले।" वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह न जानता था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है वह सच है, वरन् यह समझा कि मैं दर्शन देख रहा हूं। तब वे पहले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुंचे, जो नगर की ओर है। वह उनके लिये आप से आप खुल गया, और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, और तुरन्त ही स्वगदूत उसे छोड़कर चला गया। तब पतरस ने सचेत होकर कहा, "अब मैं ने सच जान लिया है कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया, और यहूदियों की सारी आशा तोड़ दी है।"

स्वर्गदूत परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शक होते हैं– उत्पत्ति 31:10–13, "भेड़–बकरियों के गाभिन होने के समय मैं ने स्वप्न में क्या देखा, कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं, सो धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले है। तब परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा, 'हे याकूब,' मैं ने कहा, 'क्या आज्ञा।' उसने कहा, 'आंखे उठाकर उन सब बकरों को, जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं, देख, कि वे धारीवाले, चित्तीवाले, और धब्बेवाले हैं; क्योंकि जो कुछ लाबान तुझ से करता है, वह मैं ने देखा है। मैं उस बेतेल का परमेश्वर हूं, जहां तू ने एक खम्भे पर तेल डाल दिया था, और मेरी मन्नत मानी थी। अब चल, इस देश से निकलकर अपनी जन्मभूमि को लौट जा'।"

वे परमेश्वर के लोगों को एकत्र करेंगे– मत्ती 24:30–31, "तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे।"

अतः स्वर्गदूत हमारे चारों ओर हैं और हमारे साथ आराधना में उपस्थित होते हैं। वे हमारी आज्ञाकारिता को देखते हैं। वे परमेश्वर की सुरक्षा व्यवस्था को पूरा करते हैं, परमेश्वर की योजना प्रकट करते हैं, परमेश्वर का प्रबन्ध हम तक पहुंचाते हैं, परमेश्वर के भक्तों की सेवा करते हैं, मुक्ति लाते हैं, मार्गदर्शन प्रदान करते हैं और एक दिन चारों दिशा से हमें एकत्र करेंगे।

स्वर्गदूत हमारे लिए उदाहरण है। वे हमें आराधना के वैभव का स्मरण कराते हैं। प्रकाशितवाक्य 19 परमेश्वर की महिमा का सबसे उत्तम वर्णन है–प्रकाशितवाक्य 19:1–8, "इसके बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, "हल्लिलूय्याह! उद्धार और महिमा और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर ही की है। क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं। उसने उस बड़ी वेश्या का, जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया और उससे अपने दासों के लहू का बदला लिया है।" फिर दूसरी बार उन्होंने कहा, "हल्लिलूय्याह! उसके जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा।" तब चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् किया, जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, "आमीन, हल्लिलूय्याह!" तब सिंहासन में से एक शब्द निकला, "हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासो, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उसकी स्तुति करो।" फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जन का सा बड़ा शब्द सुनाः "हल्लिलूय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया"– क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है।"

जब स्वर्गदूतों का सर्वोच्च आनन्द परमेश्वर की आराधना है तो हम क्यों न परमेश्वर की स्तुति में आनन्द लें! हमें उसके योग्य अनुराग, सम्मान, महिमा, और स्तुति चढ़ाना आवश्यक है।

स्वर्गदूत हमें स्मरण कराते हैं कि आराधना उबाऊ नहीं है। वे हमें आज्ञाकारिता का स्मरण करवाते हैं। अतः प्रभु की प्रार्थना पर ध्यान दें– मत्ती 6:9–10, "अतः तुम इस रीति से प्रार्थना किया करोः 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। 'तेरा राज्य आए। तेरी इच्छी जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।"

स्वर्गदूत परमेश्वर के आज्ञापालन ही के लिए हैं। हे परमेश्वर, मेरे जीवन में तरी इच्छा पूरी हो।

स्वर्गदूतों के साथ तीन सावधानियां...

1) हम स्वर्गदूतों की उपासना की परीक्षा में न पड़ें– कुलुस्सियों 2:18–19, "कोई मनुष्य आत्म–हीनता और स्वर्गदूतों की पूजा कराके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है, और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन–पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है।"

प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना मुंह के बल गिरकर स्वर्गदूत की उपासना करता है– प्रकाशितवाक्य 19:10, "तब मैं उसको दण्डवत् करने के लिये उसके पांवों पर गिर पड़ा। उसने मुझ से कहा, "देख, ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास हूं जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं। परमेश्वर ही को दण्डवत् कर; क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।"

स्वर्गदूत महान् हैं परन्तु वे परमेश्वर नहीं हैं।

2) हमें उनसे प्रार्थना करने की परीक्षा में नहीं पड़ना है। स्वर्गदूत परमेश्वर के तुल्य नहीं है और न ही वे प्रार्थना का उत्तर दे सकते हैं। केवल परमेश्वर ही प्रार्थना सुनता और उत्तर देता –1 तीमुथियुस 2:5, "क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।"

3) हम स्वर्गदूतों से धोखा न खाएं– 2 कुरिन्थियों 11:14–15, "यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। इसलिये यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं, परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।"

शैतान भी ज्योति के स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। अतः सावधान की आपको कैसा दर्शन मिला है। बाइबल को अपना अधिकृत आधार बनाए रखें। तो आइए अब हम दुष्टात्माओं के विषय देखें।

दुष्टात्माएं

दुष्टात्माएं क्या हैं?

परमेश्वर के समक्ष पाप करनेवाले स्वर्गदूत दुष्टात्माएं हैं जो आज भी संसार में दुष्टता फैलाते हैं।

उत्पत्ति 1:31, "तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया।"

परन्तु वे पाप में पड़ गए और उत्पत्ति 3:1, "यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था; और उसने स्त्री से कहा, "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना'?"

इसका अर्थ है कि उत्पत्ति 1:31 और 3:1 के मध्य कुछ हुआ था। शैतान और कुछ स्वर्गदूतों ने परमेश्वर से विद्रोह किया जिसका स्पष्ट उल्लेख धर्मशास्त्र में नहीं है परन्तु यदाकदा संकेत मिलता है– 2 पतरस 2:4, "क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें।"

यहूदा 6, "फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन् अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में, जो सदा काल के लिये है, बन्धनों में रखा है।"

अतः दुष्टात्माएं यही पतित स्वर्गदूत हैं जो संसार में बुराई फैलाते हैं।

शैतान कौन है?

शैतान परमेश्वर का एक करूब था परन्तु उसने परमेश्वर से विद्रोह किया और आज तक विपरीत चाल चलता है। जैसा हम सोचते हैं वैसा वह नहीं दिखता है। वह वास्तव में स्वर्गदूत सा ही दिखता है। मत्ती

25:41, "तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।"

वह अनश्वर है, अति सामर्थी है परन्तु सीमित है। उसके सब लक्षण एवं गुण एक स्वर्गदूत के ही हैं।

शैतान को भी एक पवित्र स्वर्गदूत बनाया गया था– कुलुस्सियों 1:15–16, "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।"

वह एक करूब था। अधिकांश विद्वानों का कहना है कि यहेजकेल 28 शैतान का विवरण है– यहेजकेल 28:14–16, "तू छानेवाला अभिषिक्त करूब था, मैंने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था; तू आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच चलता फिरता था। जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपनी सारी चालचलन में निर्दोष रहा। परन्तु लेन–देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भरकर पापी हो गया; इसी से मैं ने तुझे अपवित्र जानकर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा, और हे छानेवाले करूब मैं ने तुझे आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच से नष्ट किया है।"

परमेश्वर से विद्रोह करने तक वह एक करूब ही था।

यद्यपि यशायाह बेबीलोन के राजा के दण्ड के बारे में चर्चा करता है उसकी भाषा जो वचन में व्यक्त है, प्रकट करती है वह स्वर्ग में शैतान के विद्रोह से संबन्धित है– यशायाह 14:12–15, "हे भोर के चमकनेवाले तारे तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? तू मन में कहता तो था, 'मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजूंगा; मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।' परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की तह तक उतारा जाएगा।"

शैतान के पाप का कारण सामर्थ्य की लालसा था और उसके पाप का स्वभाव घमण्ड था। वह सृजनहार परमेश्वर के बराबर होना चाहता था– मैं स्वर्ग में चढ़ूंगा। मैं परमेश्वर के तारागण से ऊपर अपना आसन बनाऊंगा। वह सबसे बड़ा बनना चाहता था, सभा के पर्वत पर बैठना चाहता था। वह सबसे बड़ा अधिकार पाना चाहता था, बादलों से ऊंचा उठना चाहता था। वह परमेश्वर की महिमा पाना चाहता था, अपने आप को परमप्रधान परमेश्वर के तुल्य बनाना चाहता था। उसका उद्देश्य था कि वह परमेश्वर को हटा कर उसके सिंहासन पर बैठे। यह अभक्ति की पराकाष्ठा है। पाप का आधार घमण्ड है जिससे शैतान भली भांति परिचित है। और वह हमें भी ललचाता है।

उत्पत्ति 3 में वह हव्वा को कैसे ललचाता है? उसने कहा कि उस फल को खाकर उसकी आंखें खुल जाएंगी और वह परमेश्वर के बराबर हो जाएगी। उसकी बात मानकर हम अभक्ति की चरमसीमा पार कर जाते हैं। जेफरी ग्रोगन कहते हैं, "परमेश्वर की समानता में होने की लालसा के अतिरिक्त ऐसा कुछ नहीं है जो किसी को परमेश्वर की समानता में कम करे।" शैतान ने परमेश्वर से विद्रोह किया और आज वह परमेश्वर का विरोध करता रहता है। उदाहरणार्थ जकर्याह 3:1–2, "फिर उसने यहोशू महायाजक को यहोवा के दूत के सामने खड़ा हुआ मुझे दिखाया, और शैतान उसकी दाहिनी ओर उसका विरोध करने को खड़ा था। तब यहोवा ने शैतान से कहा, "हे शैतान, यहोवा तुझ को घुड़के! यहोवा जो यरूशलेम को अपना लेता है, वही तुझे घुड़के! क्या यह आग से निकाली हुई लुकटी सी नहीं है?"

शैतान का नाम उसकी युक्ति प्रकट करता है। उसके नाम का अर्थ है "विरोधी"। दुष्टात्माओं के प्रधान का नाम –अय्यूब की पुस्तक में प्रकट है– अय्यूब 1:6–7, "एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया। यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहां से आता है?" शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "पृथ्वी पर इधर–उधर घूमते–फिरते और डोलते–डालते आया हूं।"

इस इब्रानी शब्द का अर्थ है, विरोधी जिसका संदर्भ 1 थिस्सलुनीकियों 2:18 में है, "इसलिये हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं वरन् दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा।"

वह परमेश्वर की योजना के विरुद्ध काम करता है। वह परमेश्वर के चरित्र पर कीचड़ उछालता है। वह परमेश्वर के जनों को दुःख पहुंचाता है। वह विरोधी है।

वह विनाशक है– 1 पतरस 5:8, "सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।"

वह लूसीफर अर्थात भोर का सितारा है–यशायाह 14:12, "हे भोर के चमकनेवाले तारे तू कैसे आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है?"

इसका अर्थ है शैतान आपके पास भयानक रूप लेकर नहीं, अति आकर्षक रूप में आता है। वह अपनी योजना से आपको ललचाता है।

वह मक्खियों का प्रभु–बालज़बूब है। इब्रानी उसे घृणित मानते थे। यह शैतान का सर्वोचित वर्णन है।

वह बलियाल है अर्थात झूठ का प्रभु। वह मूर्तिपूजा की प्रेरणा देता है।

वह दुष्ट है– 1 यूहन्ना 5:19 अर्थात पूर्ण भ्रष्ट।

वह मोहित करनेवाला है। वह परमेश्वर प्रदत्त हमारी इच्छाओं को अनर्थ काम में लगाता है। यही परीक्षा है। परमेश्वर ने हमें भोजन, विश्राम, यौनतृष्णा दी है परन्तु शैतान हमें उनके दुरुपयोग के लिए प्रेरित करता है– 1 थिस्सलुनीकियों 3:5, "इस कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।"

वह इस संसार का सरदार है–यूहन्ना 12:31, "अब इस संसार का न्याय होता है, अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा।"

वह हमें ललचाता है कि हमें सांसारिक भोग विलास की आवश्यकता है। वह झूठ का स्रोत है। वह संसार की रीतियों पर राज करता है।

वह दोष लगानेवाला है– प्रकाशितवाक्य 12:10, "फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, "अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ्य और राज्य और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है,

क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया।"

आपके पाप प्रभु यीशु के लहू में घुल गए हैं परन्तु शैतान आप पर दोष लगाता है।

वह सर्प है (उत्पत्ति 3) और अजगर है– प्रकाशितवाक्य 12:7–9, "फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले; और अजगर और उनके दूत उससे लड़े, परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही। तब वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना सांप जो इब्लीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।"

2 कुरिन्थियों 11:14, "यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।"

शैतान और दुष्टात्माओं का परमेश्वर से क्या संबन्ध है?

परमेश्वर सृजनहार है और शैतान विनाशक। उत्पत्ति 1:1, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"

प्रकाशितवाक्य 9:10–11, "उनकी पूंछ बिच्छुओं की सी थीं और उनमें डंक थे, और उन्हें पांच महीने तक मनुष्यों को दुःख पहुंचाने की जो शक्ति मिली थी, वह उनकी पूंछों में थी। अथाह कुण्ड का दूत उन पर राजा था; उसका नाम इब्रानी में अबद्दोन, और यूनानी में अपुल्लयोन है।"

वह परमेश्वर की सृष्टि को नष्ट करना चाहता है। परन्तु परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और शैतान सीमित है– उत्पत्ति 17:1, "जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, "मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूं; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।"

अय्यूब 1:12, "यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।" तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।"

शैतान न तो सर्वशक्तिमान है, न सर्वज्ञानी है, न सर्वव्यापी है।

परमेश्वर सत्य है और शैतान झूठ है।

परमेश्वर प्रेम है और शैतान घृणा एवं हत्या करनेवाला है।

भजन 31:5, "मैं अपनी आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हूं; हे यहोवा, हे सत्यवादी ईश्वर, तू ने मुझे मोल लेकर मुक्त किया है।"

यूहन्ना 8:44, "तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है वरन् झूठ का पिता है।"

परमेश्वर धर्मी है शैतान दुष्ट है। परमेश्वर हमारा सहायक है।

1 यूहन्ना 2:1, "मैं ने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर इसलिये कि उसे जानते हो, और इसलिये कि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं।"

यिर्मयाह 23:6, उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएल लोग निडर बसे रहेंगे। और यहोवा उसका नाम "यहोवा हमारा धार्मिकता" रखेगा।

मत्ती 6:13, "'और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; (क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरी है।' आमीन।)"

वह दोष लगाता है– जकर्याह 3:1, "फिर उसने यहोशू महायाजक को यहोवा के दूत के सामने खड़ा हुआ मुझे दिखाया, और शैतान उसकी दाहिनी ओर उसका विरोध करने को खड़ा था।"

परमेश्वर परीक्षा में हमारा सामर्थ्य है शैतान परीक्षक है–

1 कुरिन्थियों 10:13, "तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।"

मत्ती 4:3, "तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।"

परमेश्वर न्यायकर्ता है। शैतान का न्याय परमेश्वर करता है–

प्रकाशितवाक्य 20:11–15, "फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको, जो उस पर बैठा हुआ है, देखा; उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई; अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है; और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।"

प्रकाशितवाक्य 20:1–3, "फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह–कुंड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी। उस ने उस अजगर, अर्थात् पुराने सांप को, जो इब्लीस और शैतान है, पकड़ के हजार वर्ष के लिये बांध दिया, और उसे अथाह–कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए। इसके बाद अवश्य है कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए।"

परमेश्वर और शैतान में यह अन्तर है

शैतान और दुष्टात्माओं का हम पर क्या प्रभाव है?

1 पतरस 5:8, "सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।"

वह कैसे खोजता है? कैसे फाड़ खाता है?

2 कुरिन्थियों 2:10–11, "जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो उसे मैं भी क्षमा करता हूं, क्योंकि मैं ने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में होकर क्षमा किया है कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।"

उसकी युक्तियां क्या हैं?

छल करना। वह वचन को विकृत करके आपके मन में डालता है। वह गलत शिक्षा देता है। कुलुस्सियों 2:8, "चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व–ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं।"

धर्म का भ्रमजाल दुष्टात्माओं की सेवा है।

वह भ्रष्ट प्रचारकों को काम में लेता है– 2 कुरिन्थियों 11:14–15, "यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। इसलिये यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं, परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।"

वह झूठी शिक्षा देता है– मसीह के विरोधी द्वारा– 1 यूहन्ना 2:18, "हे लड़को, यह अन्तिम समय है; और जैसा तुम ने सुना है कि मसीह का विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह–विरोधी उठ खड़े हुए हैं; इससे हम जानते हैं कि यह अन्तिम समय है।"

वह झूठे शिष्यों द्वारा छलता है– मत्ती 13:24–30, "यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त दियाः "स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। पर जब लोग सो रहे थे तो उसका शत्रु आकर गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। जब अंकुर निकले और बालें लगीं, तो जंगली दाने के पौधे भी दिखाई दिए। इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उससे कहा, 'हे स्वामी, क्या तू ने अपने खेत में

अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उसमें कहां से आए?' उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है।' दासों ने उससे कहा, 'क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उनको बटोर लें?' उसने कहा, 'नहीं, ऐसा न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए तुम उनके साथ गेहूं भी उखाड़ लो। कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूंगा कि पहले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिए उनके गट्ठे बांध लो, और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो'।"

प्रभु यीशु ने परमेश्वर के लोगों के मध्य झूठे शिष्यों की उपस्थिति की चेतावनी दी थी। मित्रों, इसी कारण हमें सतर्क रहना है। बैरी राज्य के समुदाय में झूठे शिष्य और झूठे अगुआ लाने में आनन्द का अनुभव करता है क्योंकि वे विश्वासियों को सुसमाचार से दूर ले जाते हैं। अतः हमें सावधान रहना है।

वह झूठे सदाचारों द्वारा छलता है– 2 थिस्सलुनीकियों 2:7–12, "क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए वह रोके रहेगा। तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ्य, और चिन्ह, और अद्‌भुत काम के साथ, और नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता। इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें, ताकि जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन् अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं।"

शैतान भ्रम उत्पन्न करता है कि हम सत्य का पालन कर रहे हैं जबकि होता वह झूठ है।

2) शैतान के प्रहार

शैतान प्रशासन पर प्रहार करता है– दानिय्येल 10:13, "फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया, इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास रहा।"

वह रोग द्वारा प्रहार करता है। उदाहरण, अय्यूब को उसने रोगी बनाया।

अय्यूब 2:4–6, "शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल; परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। इसलिये केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियां और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।" यहोवा ने शैतान से कहा, "सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।"

लूका 13:16, "तो क्या उचित न था कि यह स्त्री जो अब्राहम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बांध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?"

वह जीवन नष्ट करके प्रहार करता है। इब्रानियों 2:14, "इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे"

वह पवित्र जनों को सताता है। प्रकाशितवाक्य 2:10, "जो दुःख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर। क्योंकि देखो, शैतान तुम में से कुछ को जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।"

वह प्रचारकों की सेवा बाधित करता है– 1 थिस्सलुनीकियों 2:18, "इसलिये हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं वरन् दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा।"

वह विभाजन लाता है। रोमियों 16:17–20, "अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते है; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे–सादे मन के लोगों को बहका देते हैं। तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है, इसलिये मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं, परन्तु मैं यह चाहता हूं कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो। शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा।"

वह सन्देह लाता है। उत्पत्ति 3:1–5, "यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था; और उसने स्त्री से कहा, "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल

न खाना'?" स्त्री ने सर्प से कहा, "इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं; पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।" तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे! वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।"

वह यौनाचार और अनुचित उपासना करवाता है। 1 तीमुथियुस 4:1, "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे।"

वह क्रोध करने पर बाध्य करता है। इफिसियों 4:26–27, "क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे, और न शैतान को अवसर दो।"

वह घमण्ड करवाता है। 1 तीमुथियुस 3:6, "फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए।"

वह चिन्ताएं लाता है। मत्ती 13:19–22, "जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है। यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था। और जो पथरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है। पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है। जो झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता।"

वह सांसारिकता की लालसा उत्पन्न करता है। 1 यूहन्ना 2:16, "क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है।"

वह झूठ कहने के लिए प्रेरित करता है। प्रेरितों के काम 5:3–4, "पतरस ने कहा, "हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े?

जब तक वह तेरे पास रही, क्या तेरी न थी? और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न थी? तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी? तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।"

वह अनाचार की परीक्षा लाता है। 1 कुरिन्थियों 7:5, "तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिये अवकाश मिले, और फिर एक साथ रहो; ऐसा न हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे।"

वह विश्वासियों को अन्धा करता है। 2 कुरिन्थियों 4:4, "और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।"